जापान की विदेशनीति – मूल तत्व

द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व जापान विश्व की सबसे बड़ी सैन्य ताकतों में से एक था। लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध में उसकी न केवल पराजय हुई बल्कि आणविक हमले के रूप में उसने युद्ध के सबसे गम्भीर परिणाम भी भुगते। अतः उसने युद्ध के बाद अपनी नीति में आमूल परिवर्तन किया।

1- असैनिक विकास पर बल — अमेरिका ने युद्ध में पश्चिम की यह नीति थी कि जापान और जर्मनी का असैन्यीकरण किया जाए। इसके लिए अनेक प्रावधान और संधियां भी की गयीं। जापान ने भी सैन्यीकरण का रास्ता नहीं चुना क्योंकि उससे पश्चिमी ताकतें न केवल उस पर कठोर प्रतिबंध लगा सकतीं थी बल्कि उसका विभाजन भी हो सकता था। अतः जापान ने असैनिक विकास की विदेश नीति अपनायी।

2- व्यवहारिक व स्वतंत्र विदेशनीति — जापान जो युद्ध से जर्जर था। उसके सामने आर्थिक विकास पहला लक्ष्य था। अतः उसने भावुकता का त्याग कर व्यवहारवादी नीति अपनायी। जिस अमेरिका ने इस पर दो परमाणु बम गिराए थे, उसके प्रति नफ़रत पालने की बजाए और भावुक राजनीति करने की बजाए 1952 में द्विपक्षीय संधि की और विकास के रास्ते को अपनाया।

3- सुरक्षा की बजाए आर्थिक प्रगति पर बल — जापान ने 1952 की संधि के द्वारा अपनी सुरक्षा का लगभग अमेरिका को लगभग आउट सोर्स कर दी। अमेरिका ने जापान में सैनिक अड्डा बनाया। और जापान ने तेज आर्थिक प्रगति का लक्ष्य रखा। अमेरिका ने भी जापान को अपना बाजार उपलब्ध कराया। जापान तेज़ी से आर्थिक प्रगति करता हुआ ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस से आगे निकल गया और अमेरिका के बाद विश्व की दूसरी अर्थव्यवस्था बन गया। 1989 में उसका GNP सोवियत संघ के बराबर था।

4- सैन्य हस्तक्षेप से दूरी — जापान ने जर्मनी की तरह अमेरिका और पश्चिम यूरोप को लगभग सभी अन्तर्राष्ट्रीय विवादों में कूटनीतिक समर्थन तो दिया लेकिन सैन्य गठबंधनों और सैन्य हस्तक्षेप से दूर रहा। जापान कभी एशिया प्रशांत के किसी सैन्य गठबंधन में शामिल नहीं हुआ। वह UNDP सहित विश्व के प्रमुख

सहायता कार्यक्रमों में सबसे बड़े दानदाताओं में से एक बना रहा, शांति सेनाओं को आर्थिक सहायता, नाटो और अमेरिका के सैन्य अभियानों में आर्थिक सहयोग किया किन्तु कभी सैनिक सहयोग और सहायता नहीं की।

5- पूंजीवादी गुट का सहयोग किंतु कूटनीतिक तटस्थता – जापान द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अब तक सिंतर अमेरिका नेतृत्व में पश्चिमी गुट के साथ बना हुआ है। लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के प्रति उसने लगभग कूटनीतिक तटस्था अपनायी है। फिलिस्तीन संघर्ष, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध अभियान आदि में जापान की कभी भी कोई बड़ी कूटनीतिक भूमिका नहीं रही है। उसने केवल पश्चिम का समर्थन किया है।

6- क्वाड और चीन ~~[illegible]~~ → चीन जापान का परम्परागत शत्रु है। चीन के आर्थिक और सैन्य महाशक्ति के रूप में उभव से जापान को गम्भीर सुरक्षा संकट पैदा हो गया है। अतः पहली बार भारत, अमेरिका और आस्ट्रेलिया के साथ एक ऐसे गठबंधन में आया है जो कि सैन्य गठबंधन तो नहीं है। लेकिन इसका प्रमुख लक्ष्य चीन के विस्तार को अवरुद्ध करना है। अतः जापान द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पहली बार विश्व राजनीति में कूटनीतिक सक्रियता दिखा रहा है। हिन्द प्रशांत क्षेत्र और चीन ~~[illegible]~~ सम्भवतः जापान की विदेश नीति के केन्द्र में है।